प्रेषक,

निदेशक
रोग नियन्त्रण एवं प्रक्षेत्र,
पशुपालन विभाग,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

सेवा में,

समस्त मुख्य पशु चिकित्साधिकारी,
पशुपालन विभाग, उ0प्र0।

संख्या– 244/ईपीडी0/शीत लहर/2019–20 दिनांकः 20/11/2019

विषय– पशु एवं पक्षियों का शीत ऋतु के प्रभाव से बचाव के सम्बन्ध में।

महोदय,

जैसा कि आप अवगत है कि इस समय प्रदेश में शीत ऋतु का प्रारम्भ हो गया है, जिससे न्यूनतम तापमान नीचे आ गया है। इस अवस्था में उचित प्रबन्धन से मनुष्यों की भाति पशुओं को भी शीत ऋतु के प्रकोप से बचाना आवश्यक है। शीत लहर के कुप्रभाव से पशु का दूध उत्पादन गिर जाता है, तथा बच्चों की वृद्धि रूक जाती है। उचित देख रेख एवं प्रबन्धन न होने से बीमारी से प्रभावित होने पर पशु की मृत्यु भी हो जाती है। पशुओं एवं पक्षियों को शीत लहर के प्रभाव से बचाने के लिए पशु चिकित्साधिकारियों के माध्यम से पशुपालकों में निम्न बिन्दुओं का प्रचार–प्रसार करें। जिसे अपनाकर वह आर्थिक क्षति से बच सकें।

1– पशुओं/पक्षियों को आसमान के नीचे खुले स्थान में न बांधे।
2– पशुओं को घिरी जगह एवं छप्पर/शेड से ढके हुये स्थानों में रखें।
3– यह विशेष ध्यान रखें कि रोशनदान, दरवाजों एवं खिड़कियों को टाट/बोरे से ढक दें, जिससे सीधी हवा का झोंका पशुओं के मुंह तक न पहुंचे।
4– बाड़े में गोबर एवं मूत्र निकास की उचित व्यवस्था करें। मूत्र/जल भराव न होने दें।
5– बिछावन मे पुआल/लकड़ी बुरादा/गन्ने की खोई आदि का प्रयोग करें।
6– पशु/पक्षियों को बाड़े की नमी/सीलन से बचायें। ऐसा इन्तजाम करें कि धूप पशुबाड़े में देर तक रहे। बिछावन समय–समय पर बदलते रहें।
7– पशुओं को ताजा पानी ही पिलायें।
8– पशुओं को जूट के बोरे का झूल पहनायें तथा ध्यान रखें कि झूल खिसके नहीं, अतः नीचे से जरूर बांध दें।
9– पशुबाड़े के अन्दर या बाहर अलाव जलायें इस बात का विशेष ध्यान रखें, कि अलाव पशुओं/बच्चों की पहुंच से दूर रखने के लिए पशु के गले में रस्सी छोटी बांधे कि पशु अलाव तक न पहुंच सकें।
10– बाड़े में अलाव जलाने पर गैस बाहर निकलने के लिये रोशनदान खोल दें।
11– संतुलित आहार पशुओं को दें। आहार में खली, दाना, चोकर की मात्रा को बढ़ा दें।
12– धूप निकलने पर पशु को अवश्य ही बाहर खुले स्थान पर धूप में खड़ा करें।
13– नवजात बच्चों को खीस(कोलस्ट्रम) अवश्य पिलायें, इससे बीमारी से लड़ने की क्षमता में वृद्धि होती है।
14– प्रसव के बाद मां को ठण्डा पानी न पिलाकर, गुनगुना पानी अजवाइन मिलाकर पिलायें।
15– भेड़ बकरियों में पी0पी0आर0 बीमारी फैलने की संभावना बढ़ जाती है अतः बीमारी से बचाव का टीका अवश्य लगवायें।

epd

16– चूजा/मुर्गी के घरों में उचित तापमान हेतु मानक के अनुसार व्यवस्था करें और तापमान गिरने से रोकने के प्रयास किये गये।

17– गर्भित पशु का विशेष ध्यान रखें एवं प्रसव के दौरान जच्चा–बच्चा को ढके हुये स्थान में बिछावन पर ही रखकर ठण्ड/शीत से बचाव करें।

18– ठण्ड से प्रभावित पशु के शरीर में कपकपी, बुखार के लक्षण होते हैं। तत्काल निकटवर्ती पशु चिकित्सक को दिखायें, उनसे प्राप्त परामर्श का पूर्व रूपेण पालन करें।

19– आपदा से पशु की मृत्यु होने पर राहत राशि प्राप्त करने के लिये राजस्व विभाग से सम्पर्क करें।

20– पशु से सम्बन्धित किसी प्रकार की समस्या/असुविधा/जानकारी के लिये निदेशालय के पशुधन समस्या निवारण केन्द्र के टोल फ्री नम्बर– 18001805141 पर सम्पर्क करें।

(डा0 एस0 के0 श्रीवास्तव)
निदेशक,
रोग नियन्त्रण एवं प्रक्षेत्र।

संख्या– /ईपीडी0/शीत लहर/2019–20 दिनांक

प्रतिलिपि– निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित–

1– समस्त मण्डलीय अपर निदेशक, पशुपालन विभाग, उ0प्र0।
2– उपनिदेशक(प्रक्षेत्र) को इस आशय से प्रेषित की वह विभागीय पशुधन प्रक्षेत्रों पर सुझावों का अनुपालन करायें।
3– अपर निदेशक(गोधन) प्रधान कार्यालय को विभागीय सूकर/बकरी प्रक्षेत्र, अति हिमीकृत वीर्य उत्पादन केन्द्र एवं कामधेनू इकाईयों पर प्रचार–प्रसार हेतु।
4– संयुक्त सचिव, पशुधन अनुभाग–2, उ0प्र0 शासन, लखनऊ।
5– निदेशक सूचना विभाग को समाचार पत्रों के माध्यम से पशुपालकों को व्यापक तकनीकी जानकारी के प्रचार प्रसार करने के लिये प्रेषित।
6– राहत आयुक्त, उ0प्र0 शासन।

(डा0 एस0 के0 श्रीवास्तव)
निदेशक,
रोग नियन्त्रण एवं प्रक्षेत्र।

epd

प्रेषक,

निदेशक
रोग नियन्त्रण एवं प्रक्षेत्र,
पशुपालन विभाग,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

सेवा में,

समस्त मुख्य पशु चिकित्साधिकारी,
पशुपालन विभाग, उ0प्र0।

संख्या– /ईपीडी0/शीत लहर/2019–20 दिनांकः

विषय– पशु एवं पक्षियों का शीत ऋतु के प्रभाव से बचाव के सम्बन्ध में।

महोदय,

जैसा कि आप अवगत है कि इस समय प्रदेश में शीत ऋतु का प्रारम्भ हो गया है, जिससे न्यूनतम तापमान नीचे आ गया है। इस अवस्था में उचित प्रबन्धन से मनुष्यों की भाति पशुओं को भी शीत ऋतु के प्रकोप से बचाना आवश्यक है। शीत लहर के कुप्रभाव से पशु का दूध उत्पादन गिर जाता है, तथा बच्चों की वृद्धि रूक जाती है। उचित देख रेख एवं प्रबन्धन न होने से बीमारी से प्रभावित होने पर पशु की मृत्यु भी हो जाती है। पशुओं एवं पक्षियों को शीत लहर के प्रभाव से बचाने के लिए पशु चिकित्साधिकारियों के माध्यम से पशुपालकों में निम्न बिन्दुओं का प्रचार–प्रसार करें। जिसे अपनाकर वह आर्थिक क्षति से बच सकें।

1– पशुओं/पक्षियों को आसमान के नीचे खुले स्थान में न बांधे।
2– पशुओं को घिरी जगह एवं छप्पर/शेड से ढके हुये स्थानों में रखें।
3– यह विशेष ध्यान रखें कि रोशनदान, दरवाजों एवं खिड़कियों को टाट/बोरे से ढक दें, जिससे सीधी हवा का झोंका पशुओं के मुंह तक न पहुंचे।
4– बाड़े में गोबर एवं मूत्र निकास की उचित व्यवस्था करें। मूत्र/जल भराव न होने दें।
5– बिछावन मे पुआल/लकड़ी बुरादा/गन्ने की खोई आदि का प्रयोग करें।
6– पशु/पक्षियों को बाड़े की नमी/सीलन से बचायें। ऐसा इन्तजाम करें कि धूप पशुबाड़े में देर तक रहे। बिछावन समय–समय पर बदलते रहें।
7– पशुओं को ताजा पानी ही पिलायें।
8– पशुओं को जूट के बोरे का झूल पहनायें तथा ध्यान रखें कि झूल खिसके नहीं, अतः नीचे से जरूर बांध दें।
9– पशुबाड़े के अन्दर या बाहर अलाव जलायें इस बात का विशेष ध्यान रखें, कि अलाव पशुओं/बच्चों की पहुंच से दूर रखने के लिए पशु के गले में रस्सी छोटी बांधे कि पशु अलाव तक न पहुंच सकें।
10– बाड़े में अलाव जलाने पर गैस बाहर निकलने के लिये रोशनदान खोल दें।
11– संतुलित आहार पशुओं को दें। आहार में खली, दाना, चोकर की मात्रा को बढ़ा दें।
12– धूप निकलने पर पशु को अवश्य ही बाहर खुले स्थान पर धूप में खड़ा करें।
13– नवजात बच्चों को खीस(कोलस्ट्रम) अवश्य पिलायें, इससे बीमारी से लड़ने की क्षमता में वृद्धि होती है।
14– प्रसव के बाद मां को ठण्डा पानी न पिलाकर, गुनगुना पानी अजवाइन मिलाकर पिलायें।
15– भेड़ बकरियों में पी0पी0आर0 बीमारी फैलने की संभावना बढ़ जाती है अतः बीमारी से बचाव का टीका अवश्य लगवायें।

epd

16– चूजा/मुर्गी के घरों में उचित तापमान हेतु मानक के अनुसार व्यवस्था करें और तापमान गिरने से रोकने के प्रयास किये गये।

17– गर्भित पशु का विशेष ध्यान रखें एवं प्रसव के दौरान जच्चा–बच्चा को ढके हुये स्थान में बिछावन पर ही रखकर ठण्ड/शीत से बचाव करें।

18– ठण्ड से प्रभावित पशु के शरीर में कपकपी, बुखार के लक्षण होते हैं। तत्काल निकटवर्ती पशु चिकित्सक को दिखायें, उनसे प्राप्त परामर्श का पूर्व रूपेण पालन करें।

19– आपदा से पशु की मृत्यु होने पर राहत राशि प्राप्त करने के लिये राजस्व विभाग से सम्पर्क करें।

20– पशु से सम्बन्धित किसी प्रकार की समस्या/असुविधा/जानकारी के लिये निदेशालय के पशुधन समस्या निवारण केन्द्र के टोल फ्री नम्बर– 18001805141 पर सम्पर्क करें।

(डा0 एस0 के0 श्रीवास्तव)
निदेशक,
रोग नियन्त्रण एवं प्रक्षेत्र।

संख्या– 244 /ईपीडी0/शीत लहर/2019–20 दिनांक: 20/11/2019

प्रतिलिपि– निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित–

1– समस्त मण्डलीय अपर निदेशक, पशुपालन विभाग, उ0प्र0।
2– उपनिदेशक(प्रक्षेत्र) को इस आशय से प्रेषित की वह विभागीय पशुधन प्रक्षेत्रों पर सुझावों का अनुपालन करायें।
3– अपर निदेशक(गोधन) प्रधान कार्यालय को विभागीय सूकर/बकरी प्रक्षेत्र, अति हिमीकृत वीर्य उत्पादन केन्द्र एवं कामधेनू इकाईयों पर प्रचार–प्रसार हेतु।
4– संयुक्त सचिव, पशुधन अनुभाग–2, उ0प्र0 शासन, लखनऊ।
5– निदेशक सूचना विभाग को समाचार पत्रों के माध्यम से पशुपालकों को व्यापक तकनीकी जानकारी के प्रचार प्रसार करने के लिये प्रेषित।
6– राहत आयुक्त, उ0प्र0 शासन।

(डा0 एस0 के0 श्रीवास्तव)
निदेशक,
रोग नियन्त्रण एवं प्रक्षेत्र।

epd